अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड : जीवन-दर्शन

पृष्ठ १ से ७४

१	ससार एक साधना स्थली	१	१४	दीक्षा साधना के पथ पर	३१
२	मातृभूमि मेवाड	५	१५	शास्त्रीय अध्ययन	३३
३	सतसेना	८	१६	गुरुवर्य की परिचर्या	३८
४	देवगढ़ मे दिव्यज्योति	११	१७	विहार और प्रचार	४२
५	शैशवकाल और मातृवियोग	१४	१८	दिल्ली का दिव्य चातुर्मास	४५
६	दिवाकर का दिव्य प्रकाश	१६	१९	कानपुर की ओर कदम	४६
७	महामारी का आतक	१८	२०	पावन चरणो से वग-विहार प्रात	४९
८	वैराग्य का उद्भव	२०	२१	कलकत्ते मे नव जागरण	५३
९	गुरुनन्द का साक्षात्कार	२२	२२	झरिया मे दीक्षोत्सव	५९
१०	पारिवारिक-परीक्षा	२४	२३	इन्दौर चातुर्मास . एक विहगावलोकन	६१
११	प्रतिज्ञा-प्रतिष्ठापक	२६	२४	मजलगाँव मे महान् उपकार	६५
१२	एक प्रेरक-प्रसग	२७	२५	शिष्य-प्रशिष्य परिचय	६८
१३	जैन दीक्षा माहात्म्य	२८	२६	गुरुदेव के अद्यप्रभृति चातुर्मास	७४

●

द्वितीय खण्ड : संस्मरण : शुभकामना : वन्दनाञ्जलियाँ

पृष्ठ ७५ से १३०

१	वाणी का प्रभाव	७५	६	हम न चोर न लुटेरे हैं	७९
२	जोडने की कला	७५	७	पैसा पास है क्या ?	८१
३	गुरुदेव के उत्तर ने	७६	८	मैं क्या भेंट करूँ ?	८१
४	सवल-प्रेरक	७८	९	सरलता भरा उत्तर	८३
५	क्या तुम्हें डर नही ?	७९	१०	जैसे को तैसा उत्तर	८४

११	भूले पथिक को राह	८४	१६	विरोधी को प्रिय बोध	९०
१२	विरोध भी विनोद	८५	१७	भविष्यवाणी सिद्ध हुई	९१
१३	भ्राति-निवारण	८६	१८	आक्षेप-निवारण	९१
१४	समय सूचकता	८८	१९	आग मे बाग	९२
१५	जादू भरा उपदेश	८९	२०	विरोधी आप की तारीफ क्यो करते हैं ?	९३

अभिनन्दन : शुभकामनाएं

१	अभिनन्दन पत्र १ —बकानी श्री सघ	९५	१४	प्रताप की प्रतिभा —श्री लाभचन्द जी म०	१०८
२	अभिनन्दन पत्र २ —ओसवाल जैन मित्र मडल, कानपुर,	९६	१५	मेरे आराध्य देव -- श्री वसतीलाल जी म०	१०९
३	आशीप-वचन —गुरुदेव श्री कस्तूरचन्द जी म०	९६	१६	विनम्र पुष्पाजलि —मुनि हस्तीमल जी म०	११०
४	मेरी शुभ कामना —स्थविर मुनि रामनिवास जी म०	९८	१७	प्रतापी-व्यक्तित्व —मुनि प्रदीप कुमार जी	१११
५	अभिनन्दनीय यह क्षण —प्रवर्तक मुनिश्री हीरालाल जी	९८	१८	गौरव-गाथा —श्री वीरेन्द्रमुनि जी	११२
६	सरल और सुलझे हुए संत —प्रवर्तक श्री अम्बालाल जी म०	९९	१९	ऐक्यता के प्रतीक —निर्मल कुमार लोढा	११२
७	मेरी मगल कामनाए — बहुश्रुत श्री मधुकर मुनि	९९	२०	हार्दिक अभिनन्दन —मदन मुनि	११३
८	हार्दिक मगल कामना —उपप्रवर्तक श्री मोहनमुनि जी म०	९९	२१	एक अपराजेय व्यक्तित्व —श्री मूलचन्द जी म०	११४
९	श्रद्धेय श्री प्रतापमल जी म० —भगवती मुनि 'निर्मल'	१००	२२	सार्वभौमिक सत —श्री अजीत मुनि 'निर्मल'	११४
१०	प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व —मुनि श्री रमेश	१०१	२३	प्रताप-गुणाष्टक —श्री उदयचन्द जी म०	११७
११	अभिनन्दन पत्र —श्री जैन सघ, सैथिया	१०५	२४	श्री प्रताप-प्रतिभा —मरुधरकेसरी प्रवर्तक मिश्रीमलजी म०	११८
१२	आदरणीय गुरु प्रवर —महासती विजयाकुमारी	१०७	२५	प्रताप के प्रति —कविरत्न श्री चन्दनमुनि	११८
१३	सत-जीवन —साध्वी कमलावती	१०८	२६	अभिनन्दन पचकम् —मुनि श्री महेन्द्रकुमार 'कमल'	११७

२७	श्रद्धा के कुछ फूल —मुनिश्री कीर्तिचन्द जी	११९	३६	यशोगान —श्री राजेन्द्र मुनि	११४
२८	श्रद्धा के सुमन —मगन मुनि 'रसिक'	१२०	३७	वन्दनाजलि-पचक —श्री सुरेशमुनि 'प्रियदर्शी	१२५
२९	पाच-सुमन —वसन्तकुमार वाफना	१२०	३८	मेरी वदना स्वीकार हो ! —विजय मुनि 'विशारद'	१२६
३०	गुरुगुण-पुष्प —श्री अभयमुनि जी	१२१	३९	गुरु-गुण माला —नरेन्द्र मुनि 'विशारद'	१२७
३१	गुरु-भक्ति गीत —महासती प्रभावती जी —महासती सुशीलाकवर जी	१२१	४०	शत-शत वन्दना —श्री काति मुनि	१२८
३२	प्रताप-गुण इक्कीसी —मुनि रमेश	१२२	४१	महिमा अपार है —मुनि श्री मन्नालालजी	१२८
३३	वंदना हो स्वीकार ! —रग मुनिजी	१२३	४२	गुरु-महिमा —श्री प्रकाश मुनि	१२९
३४	गुरु-गुण गरिमा —अभय मुनिजी	१२३	४३	श्रद्धा से नत है —श्रीचन्द सुराना 'सरस'	१३०
३५	वदनशत-शतवार —महासती विजयकुँवर जी	१२४			

● ●

तृतीय खण्ड : प्रवचन-पंखुड़ियां

पृष्ठ १३१ से १९६

१	जीने की कला	१३१	६	मृत्यु जय कैसे वनें ?	१५८
२	सहयोग धर्म	१३८	७	समदर्शन-माहात्म्य	१६४
३	सयममय जीवन	१४३	८	वैराग्य विशुद्धता की जननी	१६९
४	सच्चे मित्र की परख	१४८	९	पचनिधि माहात्म्य	१७५
५	भगवान महावीर के चार सिद्धान्त	१५३	१०	कर्म-प्रधान विश्वकरि राखा	१८१

११ आचार और विचार-पक्ष १८८

● ●

चतुर्थ खण्ड : धर्म-दर्शन और संस्कृति पृष्ठ १९७ से २५२

१ [illegible] महावीर का [illegible] [illegible] १९७
— [illegible]

२ [illegible] महावीर २०[illegible]
— श्री [illegible]

३ [illegible] महावीर [illegible] २०६
— [illegible]

४ [illegible] दर्शन २०९
— [illegible] मुनि

५ [illegible] २१३
[illegible]
[illegible]

६ [illegible] २१७
[illegible]
— [illegible]
[illegible]

७ हमारी ज्ञानार्य परम्परा २२१
—श्री प्रतापमल जी महाराज

९ राजस्थानी रो भक्ति-साहित्य २४०
—साहित्य वारिधि श्री अगरचन्द नाहटा

१० महावीर और नारी २४७
—कमलकुमारी जैन

११ मेवाड़ भूषण महावीर २५०
—श्री प्रतापमल जी महाराज
—मदनलाल जैन

१२ सत्य शिव सुन्दर के प्रतीक २५२
—महासती [illegible] जी